Dr Vandana Suman
Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG SEMESTER - V
MJC - 09: Social and Cultural Philosophy

FEBRUARY '19 28 Wk-09 Day 059-306 THURSDAY 03/2019

"Modernity" (आधुनिकता) "Modernization" (आधुनिकीकरण)

समाजशास्त्र के क्षेत्र में आधुनिकीकरण का प्रयोग समतामूलक समाज की स्थापना एवं जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के अर्थ में होता है। इस ओरिजिन स्टोट ने अपनी पुस्तक Modernization: Protest and change में कहा है कि आधुनिकीकरण आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा परिस्थितिकीय (Ecological) क्षेत्रों में परिवर्तन है। इनके अनुसार प्रौद्योगिकी का उच्च स्तर, वयस्क मताधिकार द्वारा प्रजातंत्र में भागीदारी, अनुकूलन की क्षमता तथा परानुभूति में वृद्धि, संगठनों के आकार में वृद्धि एवं जटिलता तथा नगरीकरण में वृद्धि आधुनिकीकरण के मुख्य लक्षण हैं।

एम. एन. श्रीनिवास (M.N. Srinivas) ने आधुनिकीकरण को एक तटस्थ शब्द नहीं माना है। इन्होंने आधुनिकीकरण को सामाजिक संस्थाओं के अन्तर्गत भौतिक संस्कृति, सामाजिक संस्थाओं के क्षेत्र में तथा ज्ञान, मूल्य एवं मनोवृत्तियों में सम्मिलित किया है। आधुनिकीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया (Multi-dimensional Process) है। साथ ही यह किसी प्रकार के मूल्यों से जुड़ा (Value-laden) नहीं है, लेकिन कभी-कभी आधुनिकीकरण के लिए अच्छाई या वांछित परिवर्तन के आदर्श का प्रयोग भी किया जाता है। प्रायः आधुनिकीकरण होने वाले परिवर्तन रहे हैं। पाश्चात्य देश एवं उनमें आज के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि लोकतंत्र-शिक्षा-प्रणाली और औद्योगिक प्रगति की शुरुआत प्रायः पाश्चात्य देशों में ही हुई है। इसके परिणाम स्वरूप जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में परिवर्तन आए, इन परिवर्तनों के जो अन्य देशों में अनुकरण हुए, उसे भी हम पाश्चात्य समाजों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के रूप में जानते हैं।

आधुनिकीकरण के पाँच प्रमुख

आधुनिकीकरण

आधार है — जैसे प्रौद्योगिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक इन पहलुओं (आयामों) (Dimension of Modernization) के अन्तर्गत आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के अलग-अलग कुछ खास सूचक हैं जो इस प्रकार हैं—

(1.) प्रौद्योगिकी (Technology)

(क) ऊर्जा के निर्जीव स्रोत का अधिकतम उपयोग (Greater use of Inanimate sources of Energy)

(ख) (आधुनिक यंत्रों का उपयोग (use of Modern Technology)

(ग) भारी प्रौद्योगिकी की स्थापना (Establishment of Heavy Industries)

(2.) आर्थिक (Economic)

(क) बाजार अर्थव्यवस्था (Market Economy)

(ख) पूँजी का विकास (Development of Capital)

(ग) उपभोग की वस्तुओं का अधिकतम प्रयोग (Greater use of Commodities)

(घ) उपभोक्तावाद (Consumerism) को अधिक बढ़ावा या उपभोग

(3) राजनीतिक (Political)

(क) स्वतंत्रता (Freedom)

(ख) व्यक्तिवादिता (Individualism)

(ग) लोकतंत्र (Democracy)

(घ) सहभागिता (Participation) को बढ़ावा।

(4.) सामाजिक (Social)

(क) गतिशीलता (Social Mobility)

(ख) व्यावसायिक विभेदीकरण (Occupational Differentiation)

(ग) सार्वभौमवाद (Universalism)

(घ) विशिष्टता (Specialization)

(5.) नगरीय - औद्योगिक संस्कृति (Urban-Industrial Culture)

(च) साक्षरता एवं आधुनिक शिक्षा (Mass Lit

and modern Education) में वृद्धि।
(ग) मनोवैज्ञानिक (Psychological)
(क) विश्वजनीन विचार (Cosmopolitan outlook)
(ख) उपलब्धि की मनोवृत्ति (Achievement orientation)।
(ग) परानुभूति (Empathy)

हरबर्ट ब्लूमर (Herbert Blumer) का कहना है कि परम्परागत समाज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से गुजरता है तो समाज में पाँच किस्म की प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलती है, जो इस तरह से हैं

(1) अस्वीकारात्मक प्रतिक्रियाएँ (Rejective Responses) – जैसे – रूढ़िवादी समाज। वह आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का हर संभव प्रकार करने की विरोध करता है। समाज में कुछ ऐसे तत्व होते हैं, जिसके स्वार्थों की पूर्ति परम्पराओं से अधिक होती है। आधुनिक समाज में उनके स्वार्थों का अंत होने की संभावना है।

(2) विभाजक प्रतिक्रियाएँ (Disjunctive Responses) – समाज परम्परा एवं आधुनिकता के बीच समझौता कर जाता है। जैसे – भारतीय समाज। यहाँ परम्परा एवं आधुनिकता के बीच विरोध कम होता जा रहा है। दोनों साथ – साथ चल रहे हैं।

(3) आत्मसाती प्रतिक्रियाएँ (Assimilative Responses) जब आधुनिकीकरण प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परम्परागत मूल्यों का समर्थक बन जाता है तो वैसी परिस्थिति में आधुनिकीकरण को लोग बहुत आसानी से अपना लेते हैं। जैसे – दूरदर्शन के द्वारा बहुत सारी परम्परागत चीजों का प्रचार प्रसार आसानी से हो जाता है इसलिए हर किसी ने बिना हिचक अपना लिया है।

(4) विघटनकारी प्रतिक्रियाएँ (Disruptive Responses) आधुनिकीकरण कभी-कभी समाज के सारे परम्परागत मूल्यों एवं प्रतिमानों को उखाड़ फेंकता है।

समाज आर्थिक विकास के दौर में काफी पीछे और परम्परागत मूल्यों से काफी दबा हु

है और समाज के लिए आधुनिकीकरण एक विघटनकारी प्रक्रिया के रूप में है और जब यह प्रक्रिया समाज के हित में चलती है तो विघटनकारी होते हुए भी समाज इसे अपनाता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि समाज में लोग इस प्रक्रिया का विरोध नहीं करते है। बहुत सारी भारतीय जनजातीय समाजों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एक विघटनकारी प्रक्रिया रही है।

आधुनिकीकरण (Factors of Modernization) के पाँच प्रमुख कारक है, जो इस तरह से है —

(1). शिक्षा (Education) — ज्ञान और विज्ञान का प्रचार आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के लिए एक नितान्त आवश्यक शर्त है। यह मनुष्यों को अपनी समस्याओं को सुलझाने और भविष्य के निर्माण में मदद करता है।

(2). संचार (Communication) - ज्ञान और विज्ञान से संचार के माध्यमों का विकास होता है और फिर उससे ज्ञान और विज्ञान का प्रचार-प्रसार होता है। दूरसंचार के साधनों, जैसे - टेलीफोन, टी०वी०, रेडियो एवं छपाई माध्यमों (Print media) ने आधुनिकीकरण को बढ़ाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

(3) राष्ट्रवादी विचारधारा (Nationalism Ideology) — आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए यह भी जरूरी है कि लोगों के बीच में राष्ट्रवादी विचारधारा को बढ़ाया जाय, यदि लोग भाई-भतीजावाद, जातिवाद और क्षेत्रीयता जैसी संकीर्ण भावनाओं से ग्रसित रहेंगे तो कोई भी मुल्क तरक्की नहीं कर सकता है। देश को आगे बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि लोगों के मस्तिष्क में राष्ट्रगीत

की भावना की सर्वोपरि है। संकीर्ण दायरे में जीनेवाला व्यक्ति कभी भी राष्ट्र के हितों की रक्षा नहीं कर सकता है। इसलिए आधुनिकीकरण को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ाना नितान्त आवश्यक है।

(4) करिश्माई नेतृत्व (Charismatic Leadership) – राष्ट्र के दिशा-निर्देश में नेताओं की भूमिका अहम होती है। परम्परागत समाज जो आसानी से बदलाने का इच्छुक नहीं होता है, उसे हमेशा एक ऐसे नेता की आवश्यकता होती है जो समाज को परम्परात्मक व्यवस्था से आधुनिक व्यवस्था की ओर ले चले। इतिहास इस बात का गवाह है कि जब भी किसी समाज की विकासोन्मुखी आधुनिक समाज बनाने की आवश्यकता पड़ी है तो करिश्माई नेताओं ने राष्ट्र को आगे बढ़ाने में एक नया आयाम दिया है। टर्की में कमाल पाशा, भारत में महात्मा गाँधी एवं जवाहरलाल नेहरू, पाकिस्तान में मुहम्मद अली जिन्ना और जर्मनी में बिस्मार्क ने अपने राष्ट्र को आधुनिकीकरण की राह पर बढ़ाने में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

(5) अवपीड़क सरकारी प्राधिकार (Coercive Governmental Authority) – साधारणतया समाज एक दकियानूसी व्यवस्था (Conservative organization) है। वह आसानी से बदलना नहीं चाहता है। जब कभी सरकार विकास की नयी योजनाओं को लागू करती है तो बहुत लोग उसका विरोध करते हैं। नयी चीजों की तुलना में लोग अपने परम्परागत क्रियाएँ, कार्य-प्रणालियों एवं उपकरणों में ज्यादा ही विश्वास करते हैं। यह बात सर्वविदित है कि भारत में लोगों ने परिवार नियोजन एवं भूमि-सुधार जैसी लाभकारी योजनाओं का काफी विरोध किया। ऐसी परिस्थिति में एक अवपीड़क सरकार की कोई सरकारी प्राधिकार वांछनीय है।

कार अपनी योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू करना रहता है और जब कुछ लोग उसे स्वीकार कर लेते हैं तो धीरे-धीरे समाज में उसको स्वीकृति मिल जाती है।

भारत में आधुनिकीकरण (Modernization in India) — रूडाल्फ एवं रूडाल्फ (Rudolph and Rudolph, 1965) का स्पष्ट कथन है कि अंग्रेजों ने ही भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की नींव डाली। भारत को अर्थव्यवस्था एवं राजनीतिक एकता भी उन्होंने ही दी। भारत में नये शिक्षित वर्ग को जन्म देने का श्रेय प्रेस एवं नयी शिक्षा प्रणाली को है। नयी प्रविधियों, सिंचाई के साधनों एवं यातायात की सुविधाओं से कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। सड़कों के विस्तार ने गाँवों की जड़ता एवं पृथकता को समाप्त कर दिया। रेल यातायात व्यवस्था ने उद्योगों का विस्तार किया जिससे जाति व्यवस्था में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। फलस्वरूप एक ओर जाति ने ग्रामीण व्यवस्था को बनाए रखा तो दूसरी ओर प्रजातंत्र को भी।

रूडाल्फ ने भारत में कानून एवं न्याय-व्यवस्था के आधुनिकीकरण का भी उल्लेख किया है। कानून का शासन (Rule of law) एवं वर्तमान न्याय-व्यवस्था भारत को अंग्रेजों की एक अच्छी देन है। इसके पहले देश में शासन भिन्न-भिन्न प्रथाओं एवं सामन्तों की इच्छाओं से चलता था। अंग्रेजों द्वारा ही सम्पूर्ण भारत में एक ही कानून एवं न्याय-व्यवस्था का प्रशासन कायम हुआ। ब्रिटिश शासनकाल में ही बाल-विवाह, विधवा पुनर्विवाह, स्त्री सम्पत्ति अधिकार, उत्तराधिकार एवं सती-प्रथा निरोधक अधिनियम बने, जिसने परम्परागत भारतीय समाज में आधुनिकता का मार्ग प्रशस्त किया। आजाद भारत में

पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन में आधुनिकीकरण को और भी तेज करने का प्रयास किया गया। इसी के साथ में उच्च तकनीक के सहयोग से भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई। सूती कपड़े, खाद, दवाइयाँ, सीमेंट, मशीनें तथा अणुशक्ति के प्लाण्ट एवं कारखाने खोले गए। इससे निःसंदेह लोगों की आमदनी में वृद्धि तथा जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

शिक्षा एवं ज्ञान के क्षेत्र में निरंतर विशिष्टीकरण (Specialization) के प्रसार ने भी भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का विस्तार किया। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवी वर्ग के उदय ने राष्ट्रीयता के विकास में अहम भूमिका निभाई।

भारतीय संविधान ने भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को सरल बना दिया। जाति, धर्म, प्रजाति, लिंग, रंग आदि के आधार पर भेदभाव और अस्पृश्यता को कानूनी रूप से समाप्त कर दिया गया। वैचारिक स्वतंत्रता एवं समानता के अधिकार ने लोगों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। संयुक्त परिवार के परम्परागत मूल्यों में भी परिवर्तन आया है। परिवार में शिक्षित सदस्यों एवं महिला की स्थिति में परिवर्तन आए हैं। नारियाँ भी पीछे नहीं हैं। वे अपने अधिकारों की रक्षा के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में सहभागिता एवं अधिकार का दावा पेश कर रही हैं। नारी-मुक्ति आन्दोलन भी शहरों में काफी तेजी पकड़ रहा है। पितृसत्तात्मक मूल्यों के खिलाफ भारतीय नारियाँ जिहाद छेड़ चुकी हैं। नारियों को घर एवं घर के बाहर समुचित स्थान एवं सम्मान मिल सके, इसके लिए बहुत सारी स्वयंसेवी संस्थाएँ काम कर रही हैं। भारत सरकार ने भी इस क्षेत्र में बहुत सारी योजनाओं को कार्यान्वित करने की कोशिश की है।

यदि हम वर्तमान भारतीय समा

का विश्लेषण प्राचीन एवं मध्यकालीन समाज की पृष्ठभूमि में करते हैं तो निश्चित रूप से भारतीय समाज की पृष्ठभूमि में करते हैं तो निश्चित रूप से भारतीय समाज में भारी परिवर्तन दिखाई पड़ता है। दूसरी तरफ यदि भारतीय समाज की तुलना विकसित देशों से की जाती है तो भारतीय सामाजिक संरचना एवं मूल्य काफी परम्परागत लगते हैं। इसमें कोई सन्देह की बात नहीं कि आधुनिकीकरण के दौर में भारत काफी पीछे है। मोटे तौर पर यही लगता है कि भारतीय समाज परम्परागत एवं आधुनिक समाज के बीच कहीं अवस्थित है और वह कछुए गति से आधुनिकीकरण की ओर बढ़ता जा रहा है। लेकिन भारत सम्भवतः कभी भी पश्चिमी देशों का कार्बन-कापी नहीं बन सकता।

श्यामाचरण दुबे के अनुसार -

परम्परा और आधुनिकता भारत में विरोधाभास के रूप में मौजूद है। यदि एक तरफ वर्ग व्यवस्था है तो दूसरी तरफ जाति व्यवस्था एवं जातिवाद उतना ही जीवन्त है। क्षेत्रीयता (Regionalism) भाषाई उग्र राष्ट्रीयता (Linguistic Chauvinism) साम्प्रदायिकता (Communalism) इत्यादि ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण में बाधा पहुँचाई है। आरोपित (Ascribed) एवं अर्जित (Achieved) सामाजिक पदों का तालमेल नहीं बैठ पाया है। यदि एक तरफ आधुनिकता तटस्थता चाहती है तो दूसरी तरफ परम्परा भावात्मकता। आज का भारत परम्परा एवं आधुनिकता की द्विविधा में फँसा हुआ है। लोग यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि हमें किस हद तक अपनी परम्परा को छोड़ देना है और उसकी जगह आधुनिकता को अपना लेना है। आज भारत के लोगों में अतीत का आकर्षण है तो दूसरी तरफ प्रगति की अनिवार्यता। बदलते हुए परिवेश में लोग

बहुत कुछ अपनी - अपनी आकृति आगमते हैं। दूसरी तरफ आकांक्षाओं के नये क्षितिज चुना चाहते हैं। ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण भारतीय जीव परम्परा और आधुनिकता के बीच सहमा खड़ा है। संक्षेप में हम यही कह सकते हैं कि नयी शिक्षा - प्रणाली, नयी अर्थ कानूनी एवं प्रशासनिक व्यवस्था, सामुदायिक विकास योजना, नगरीकरण, औद्योगीकरण, यातायात एवं संचार के नये - नये साधनों, प्रजातांत्रिक चुनाव पद्धति, इत्यादि ने उपरोक्त परिवर्तनों को लाने में अहम भूमिका निभायी है।

जब समाज परम्परागत व्यवस्था से आधुनिकता की ओर बढ़ता है तो कई बार इसे चाहे - अनचाहे विभिन्न किस्म की समस्याओं को भी झेलना पड़ता है, जिसे समाज शास्त्र की भाषा में आधुनिकीकरण का दुष्प्रकार्य (Dysfunctions of modernization) कहते हैं। आधुनिकीकरण के दौरान शिक्षा का काफी प्रचार - प्रसार होता है। हर किसी को अपनी इच्छा और योग्यता के मुताबिक पढ़ने का पूरा - पूरा अवसर प्राप्त होता है। लेकिन अपनी योग्यता के अनुसार हर किसी को जीवनयापन के लिए नौकरियाँ नहीं मिल पाती हैं। काफी लोग पढ़लिखकर बेकार हो जाते हैं। फलस्वरूप समाज में नवयुवकों को बहुत प्रकार की समस्याओं से गुजरना पड़ता है जो सामाजिक तनाव, राजनीतिक अस्थिरता एवं शहरों में बढ़ते हुए अपराधों में परिलक्षित होती है। नारी - शिक्षा से कुछ अच्छे परिवर्तन आए हैं तो दूसरी तरफ पारिवारिक तनाव की घटनाओं एवं दहेज प्रथा में वृद्धि हुई है।

आधुनिकीकरण वैज्ञानिक मूल्यों पर आधारित खुली प्रक्रिया है, जिसकी प्रकृति मूलतः उद्‌विकासीय है। अतः हम कह सकते हैं कि आज न तो कोई समाज पूर्णतया आधुनिक है और न ही परम्परागत।